अंतरा-शब्दशक्ति

बस तुम ही ..

काव्य संग्रह

अंजली पंड्या

बस तुम ही,..

(काव्य संग्रह)

अंजलि राकेश पंड्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-05-5

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- अंजलि राकेश पंड्या
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Bas tum hi by Anjali Rakesh Pandya

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

प्रायः देखा जाता है कि अपने आसपास प्रियजनों के साथ घटित घटनाओं की स्मृति मानस पटल पर अमिट अंकित हो जाती है और कभी - कभी इससे इतने प्रभावित हो जाते है कि स्वयं उसी किरदार को जीने

स्त्री-पुरुष के आपसी प्रेम की थाह पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। परस्पर आहत, मानअपमान-, जयपराजय-, प्रेम-दुत्कार, अभिमानस्वाभिमान-, निमंत्रणनियंत्रण-, अनुग्रहविग्रह- आदि अन्तर्द्वन्द् की हज़ारों आँधियों में भी स्त्री अपने व अपने प्रियतम के वजूद को बनाए रखना चाहती है। जहाँ प्रेमिका को अपने प्रियतम के वियोग की दर्द भरी छटपटाहट न जीने देती है न मरने, वहीँ प्रेम के आलम्बन में एक अप्रतिम उत्साह, उमंग, आशा और विश्वास का सुखद अनुभव होता है। इन वेदना भरी संवेदनाओं के बीच बहते भाव कलम उठाने को मजबूर कर नायिका की मनोदशा का वर्णन करने लगते हैं ।

इन्हीं से प्रेरित होकर मैंने भी अपने अंतर्मन के भाव तरंगों को श्रृंगार रस के संयोग व वियोग दोनों भावों द्वारा इकरार", आँसू भरे मोती, ख़ामोशी का ठिकाना, भूल जाओ हमें, सीखा दिया तुमने, राज़ख़ामोशी-ए-, रुसवाई, प्रीत, सोचूँ या भुला दूँ, अनदेखे धागे, मन मन्दिर में छविमान हो मेरे, चाँदनी, इज़ाज़त, यादों का दरिया, गुनगुनाने लगे है अब, नाराज़गी, यूँ ही, आसमां का ज़मीं से मेल करा दूँ, शब्दों के मोती, सोचूँ या बेचैन कर दूँ, संदेहों का घेरा, क्षितिज, ज़िन्दगी, दोस्त वो पुराने कहाँ हैं और धूप उक्त शीर्षकों "छाँव-

की रचनाओं से मैंने अपनीसंवेदनाओं को इस काव्य संग्रह बस तुम ही के .... माध्यम से आप पाठकगणों से साझा करने का प्रयास किया है।

आशा है कि मेरी ये रचनाएँ पढ़कर आप सभी का आशीष मिलेगा।

भवदीया

अंजलि राकेश पंड्या

अनुक्रमणिका

1. इकरार 7

2. आँसू भरे मोती 8

3. खामोशी का ठिकाना 9

4. भूल जाओं हमें 10

5. सिखा दिया तुमने 11

6. राज-ए-खामोशी 12

7. रूसवाई 13

8. प्रीत 14

9. सोचूं या भुला दूँ 15

10. अनदेखे धागे 16

11. मन मंदिर में छविमान हो मेरे 17

12. इंतजार 18

13. चाँदनी 19

14. इजाजत 20

15. यादों का दरिया 21

16. गुनगुनाने लगे हैं अब 22

17. नाराजगी 23

18. यूँ ही 24

19. आसमॉं का जमीं से मेल करा दूं 25

20. शब्दों के मोती 26

21. सोचूं या बेचैन कर दूँ 27

22. संदेहों का घेरा 28

23. क्षितिज 29

24. जिंदगी 30

25. दोस्त वो पुराने कहॉं हैं 31

26. धूप-छॉंव 32

।। इकरार ।।

जिससे पागलपन की हद तक प्यार कर लिया,
बस उसी ने दो कदम साथ चल इन्कार कर लिया।

जो सागर की गहराई से अरमान सजाता रहा,
बस उसी ने ज्वार-भाटा की लहरों संग इकरार कर लिया ।।

थार की रेत पर कदमों के निशां बनाते रहे हम,
और उसने मृग मरीचिका संग करार कर लिया ।।

समझाते रहे हकीकत का आईना दिखाते हुए,
पर हमें भी अब तो दुश्मनों में शुमार कर लिया ।।

संग बिताये पलों को बिसराने का अंदाज देखकर,
हमने भी बहाना बना भूल जाना स्वीकार कर लिया ।।

ऐ मेरे वक्त तू भी बदलता ज बेवफा बनकर,
हमने तो तन्हाईयों से जीने का इजहार कर लिया ।।

।। आँसू भरे मोती ।।

भीगे नयनों की इन सीपियों में,
आँसू भरे मोती छिपाए बैठे हैं ।

चुन-चुन कर अरमानों को,
टूटे धागों में सजाए बैठे हैं ।।

पथरीली राहों में ख्वाब दिखा,
चंद कदमों का संग लुटाए बैठे हैं ।

तन्हाई में हम तेरे अहसासों के,
रंगी निशां चेहेरे पे बनाए बैठे हैं ।।

यादों को तेरी पतझड़ में भी,
बसन्त बहार मनाए बैठे हैं ।

ओस कणों से जो बनाई तस्वीर तूने,
उसे संजोने आवरण चढ़ाए बैठे हैं ।।

।। खामोशी का ठिकाना ।।

इन आखों का ख्वाब देखे जमाना हो गया,
इन लबों पर खामोशी का ठिकाना हो गया ।

खता ये हुई कि इलजाम कबूल कर गए,
ये दिल अब मुजरिम तेरा पुराना हो गया।

अब तो हक जताएँ भी तो तुझपे कैसे,
अब तो गैरों से तेरा याराना हो गया।

न कोई शिकवा, न शिकायत ही करेंगे,
वक्त बेवक्त तेरा याराना हो गया।

ऐ जिन्दगी! अब तो जी ही लेंगे तुझे,
सितमगर नहीं, तू तो सयाना हो गया हैं ।।

।। भूल जाओं हमें ।।

इजाजत हैं तुम्हे भूल जाओं हमें,
अब न यादों के मंजर दिखाओं हमें ।

हो जाएंगे फना तेरे ही ख्वाबों में,
अब न अधुरा प्यार जताओं हमें ।

गा लेंगे सरगम खुशियों की भी,
अब न उदासी की गजल बनाओं हमें ।

सह लेंगे अजनबी से लहजे तेरे,
अब न भरे दोस्तों में रूलाओं हमें ।

पढ़ लेंगे लफ्ज कोरे कागज पे भी,
अब न दर्द-ए-दिल लिखवाओं हमें ।

माना कि अब न रहे हम दिल रूबा तेरे,
पर यू लोगों के सामने न सुनाओं हमें ।

तेरी यादों से गिरी तन्हाईयों में
कैसे गुजारू हम पल अब न सताओं हमें ।

ये कौनसी प्रीत की डोर खींच ले गई तुम्हे,
साथ पाकर उनका खुश हो तो बताओं हमें ।

ढूढती रहती हैं नम ऑखे दर-बदर
अब न खारी फुहारों से भिगाओं हमें ।

गुनगुनाने दो अहसासों को अल्फाजों में,
अब न खामोशी के शौकिन बनाओं हमें ।।

।। सिखा दिया तुमने ।।

वफा की राह में बेपरवाह - सा,
चलना सिखा दिया तुमने ।

बेवफाई की राह में गिर - गिर,
सम्भलना सिखा दिया तुमने ।।

प्रीत की यादों को संजोये दिल में,
गम में भी हँसना सिखा दिया तुमने ।।

जमाने से मुस्कान बनावटी लेकर,
छुप - छुप रोना सिखा दिया तुमने ।।

हर पल की बेरूखी ने बस अब,
तिल - तिल मरना सिखा दिया तुमने ।।

।। राज-ए-खामोशी ।।

खुदा के नाम की लहर बहानी होगी,
शम्मां तेरी याद की जलानी होगी ।

जमाना क्या जाने राज-ए-खामोशियाँ तेरी,
पहचान तेरी शख्सियत की बतानी होगी ।

यूँ न बदले गर हर बार मौसमी सीरत तेरी,
तो ये सूरत भी आईने की दीवानी होगी ।

इतनी बेरूखी कि मुद्धत से बुलाया नही,
अब तो दास्तां तकरार की भुलानी होगी ।

रोज आते तो हो यादों में दस्तक देने,
रानाई मेरे दिल की तो जतानी होगी ।

मर्ज बढता गया उनका जीना हुआ गवारा,
इश्क की एक घुट्टी तो पिलानी होगी ।।

।। रूसवाई ।।

बेरूखी से तेरी अनजान नहीं हैं हम,
देखी रूसवाई तेरी नादान नहीं हैं हम ।

धुंधला ही सही वो आईना हैं पर
बिना सितारों का आसमान नहीं हैं हम ।

हम तो शायर हैं तेरी ही शायरी के,
किसी और की पहचान नही हैं हम ।

इश्क में तेरे दीवाने हुए इस कदर,
हम सफर हैं खुदा या रहमान नही हैं हम ।

तुझसे ही हैं मेरे जीवन में बहार,
दस्तक-ए-दिल दें ऐसे मेहमान नही हैं हम ।।

।। प्रीत ।।

बचपन यादों के कोहरे से ढँक गया,
जिंदगी बीत गई पर निभाते गए हम रीत ।।

जानते हुए अन्जान बनते रहे हम,
हार ही गले लगाई चाहे गए हम जीत ।।

न जाने वो लम्हे कहाँ गए हैं गुम,
वो गुदगुदाते पल और गुनगुनाते गए हम गीत ।।

चाहे हर रोशनी ले भी जाए अंधेरे तक,
फिर भी आस बाकी हैं जब साथ मिले हम मीत ।।

ठहरी हुई झील का खारा पानी हुए हम,
फिर भी मौजों में बहती रहे तेरी मेरी प्रीत ।।

।। सोचूं या भुला दूँ ।।

तेरी चाहतों में इतने मजबूर हो गए हम,
कि खुशियाँ भी नजर आने लगी अब गम ।।

मन करता हैं बदल लूं खुद को खुद से,
सोचूं, भुला दूँ तुम्हे पर आँखे हो जाती हैं नम ।।

न हम वो राही रहे न वो रास्ते रहे,
न वो सांसे रही जो धधकती थी हरदम ।।

हरपल इन आँखों में रहने लगी हैं नमी,
रोता रहता हैं दिल मुरझाने लगे हम ।।

चलों मान लेते हैं तुम जीते हम हारे,
अब साँसे बसी हैं चंद और नब्ज गई हैं थम ।।

।। अनदेखे धागे ।।

अनदेखे धागों में मत बाँधो
मेरी भावनाओं को बहने दो,
अनकहे से इन शब्दों को
मौन की भाषा कहने दो ।

प्रीत की प्रगाढता को
नयनों से ही झरने दो,
आँखों की शर्म से अब
मेरे लबों को बंद रहने दो ।

हरियाले सावन की यादें
मन के झरोगे बसने दो,
अपनेपन की ये बरखा
बूंद-बूंद में बरसने दो ।

तुझे पाने की कोशिश में
कुछ गम हमकों सहने दो,
ख्वाबों के होंसलों को
कुछ पल यूँ ही बहकने दो।

समन्दर के गहरे सफर में
कश्ती मेरी डूब जाने दो,
ना भी मिले किनारा गर
बस यूँ ही मुझे तरसने दो।।

।। मन मंदिर में छविमान हो मेरे ।।

तुम अफसोस नही अरमार हो मेरे,
जुदा नही खुदा का फरमान हो मेरे।

तुम गीत, गजल, तुम ही अहसास हो,
पढ़ूं या लिखूँ, तुम ही हर गान हो मेरे।

रूठं, मनाउँ, हाल-ए-दिल बताउँ
तुम ही मेरे मीत और अभिमान हो मेरे।

सपनों में, अपनों में, न भूल पाए तुम्हे
आज भी मन के मंदिर में छविमान हो मेरे।

मुमकिन नही यादों में भी भूल पाना तुम्हे
गजल के हर शेर में विद्यमान हो मेरे।।

।। इंतजार ।।

नशा नही यही हैं मेरा तेरी चाहत पे एतबार करूं,
इश्क सजा हैं गर तो, यही खता मैं हरबार करू ।

जीने मरने का वादा किया हैं तुमसे हमदम,
इन कसमों की रस्मों को निभाया बारबर करू ।

मेरी धडकन, मेरी साँसे बस तेरे ही नाम करू,
खुशियों के इस गुलशन को अब गुलजार करूं ।

तन्हां रहे हर महफिल में इश्क में हम तेरे,
राह सदा संग चलने का मैं इकरार करूं ।

सितम सह गए हम तेरी एक जुदाई का,
अंतिम आँखे बंद कर भी तेरा इंतजार करूं ।।

।। चाँदनी ।।

सितारों के झिलमिलाने से
प्रेयसी का हर ख्वाब उजला हुआ
चरागों के जगमगाने से
चाँदनी की ओढकर सोने लगा ।

उनींदी आँखों के चमचमाने से
दृष्टि की नि:शब्दता को गीत मिला
पलकों के सुगबुगाने से
दर्द का आलम कम होने लगा ।

कोंपलों के गुनगुनाने से
प्रीत का अवगुंठन खिल उठा
चितवन के कसमसाने से
प्रेम के बीज वो बोने लगा ।

गुलशन के महकने से
भौरों का गुंजन गुंज उठा
दरिया के थक कर बैठने से
समन्दर भी रोने लगा ।।

।। इजाजत ।।

न कुछ पूछने की इजाजत,
न कुछ कहने की इजाजत ।

सहेजकर रखी यादें अब,
न सपने देखने की इजाजत ।

बंधनों मे बंधे कब तक रहे,
न कसम तोडने की इजाजत ।

कशमकश में उलझे रहे हम,
न फरियाद करने की इजाजत ।

मिलन को गुलाब से महके पर,
न गुलों को खिलने की इजाजत ।

भर आऐ मन और तर नयन पर,
न अश्क बहने की इजाजत ।।

।। यादों का दरिया ।।

तेरी यादों का जो दरिया मुझमें बहता हैं,
छूप-छूप कश्तियों और किनारों से लडता हैं ।

मत समझों इन खामोशियों को तन्हा,
इनकी बुंद - बूंद में उफान भरा रहता हैं ।

बहुत पढा गुलों को गुलशन–गुलशन,
पर हर गुलाब अब नागफनी–सा लगता हैं ।

आईना भी जिसे देखकर रूठ - रूठ जाए,
हूबहू तू मोम के पुतले से मिलता हैं ।

चेहरे पे चेहरा लगाए उल्फत की जिंदगी जीता,
बातों, जज्बातों मे कभी कभी सच भी कहता हैं।।

।। गुनगुनाने लगे हैं अब ।।

दर्पण में देख-देख मुस्कुराने लगे हैं अब,
स्वप्न सारे हकीकत दिखाने लगे हैं अब ।

बीती रजनी अरूणिमा ऊषा की बेला आई,
पलके हैं भारी, ओठ थरथराने लगे हैं अब ।

व्याकुल है तन-मन लिए चाहत तुम्हारी,
अहसास ये क्षण-क्षण तडपने लगे हैं अब ।

मौसम की तरह वो बदलने लगे हैं अब,
पतझड से पहले ही पत्ते पिलपिलाने लगे हैं अब ।

लिखते-लिखते गम बनते गए गीत मेरे,
सरगम तेरे प्यार की गुन गुनाते लगे हैं अब ।।

।। नाराजगी ।।

चॉंद से नाराज हो सूरज ने चमकना छोड दिया,
बादलों की ओट छिपकर तारों ने चमकना छोड दिया।

दिन के उजालों में जागने का रिवाज नही अब,
रजनी की अंधियारों में भी सोना छोड दिया।

साँझ की अरूणिमा किरणों संग करने लगी अठखेलियाँ,
भोर की कनक राशि को भी निहारना छोड दिया।

सर्द हवाओं की पुरवाई से नाता जोडकर,
बिन लहरों खामोंश समन्दर को नापा छोड दिया।

तपती दुपहरी को सुहावना बसन्त मानकर,
जेठ की धूप में भी बरगद की छॉव ढूँढना छोड दिया।।

।। यूँ ही ।।

यूँ ही कटेगा सफर चलो तो सही,
माँग कर मेरा हाथ थामों तो सही ।

यूँ ही छंट जाएगा ये धूंध का कहर,
कभी इशारा करके देखों तो सही ।

यूँ ही निभा जाएंगे रीत ये प्रीत की,
मेरे अहसास में तुम धुलो तो सही ।

यूँ ही बंध जाएंगे अरमानों की डोर में,
इन इनदेखे धागों को रंगो तो सही ।

छूपे हैं अधर शर्म के पर्दे में "अंजलि"
तुम नजरों से ही कुछ कहो तो सही ।।

।। आसमाँ का जमीं से मेल करा दूं ।।

मन करता हैं आज इन आँखों में अम्बर छुपा दूँ,
इश्क के हर मंजर को मैं अश्को में बहा दूँ ।

बादलों के विरह में मुसलाधार रोती हैं बरखा,
बन के जल प्रलय मुहब्बत की बस्तियाँ डूबा दूँ ।

साँझ के अंधियारे को जुगनू बन चिढा जाऊँ,
चाँद की चाँदनी से अमावस का पर्दा हटा दूँ ।

काश, कि सूरज की तपन भी सितारों सी झिलमिलाए,
जी करता हैं आसमां का जमीं से मेल करा दूँ ।।

।। शब्दों के मोती।।

मेरे शब्दों के अनगिनत मोतियों को चुन न पाए,
मेरे ख्वाबों के तिनकों से घोंसला बुन न पाए।

जमाने की हर सदा पर मुड-मुड देखा तुमने,
पर मेरे होठों के सजदों को कभी सुन न पाए।

खींचकर तस्वीर तेरी बसा ली मेरी ऑखों में,
प्रेमनगर के मंदिर में भाव की मूरत चुन न पाए।

फूल मानकर चलते रहे चुभते पॉवो में शूल को,
सुख-दु:ख की बगिया में भँवरों-सा फिर गुन न पाए।

जीवन की सरगम को गीत, गजलों में सजाते रहे,
बातों से तेरी घायल ही हुए, श्वासों के संगीत सुन न पाए।

।। सोचूं या बेचैन कर दूँ ।।

जुगनुओं की चमचमाहट में साँझ याद दिला जाती हैं,
मुहब्बत के गुलशन में सजे गेंदा, गुलाब महका जाती हैं।

सोचू, ओंढ लूँ घूंघट और छुपकर बेचैन कर दूँ तुझे,
चुपके से उठा लूँ चुनर और नजरे मिला जाती हूँ।

मीठी, गहरी बातों को सुनने कदम वहीं बढ जाते हैं,
पथरीली हो उगर चाहे, छालों को भी रूला जाती हूँ।

छाँव को तेरे परछाई में भी ठंडी आहे भर लेती हूँ,
हम में तुम, तुम में हम समन्दर को लजा जाती हूँ।

रिश्तों के विस्तार की टीस दर्द देती हो बार-बार,
तो जीत पर भी हार का मलहम लगा जाती हूँ।

उधडबुन में उलझते न रहो यूँ बिखरे-बिखरे से,
उधडते, उलझते धागों से सीलती, सुलझा जाती हूँ।

खुदाई जर्रे - जर्रे की और गवाही पन्ने - पन्ने की,
गजल की गलियों में शायरियों के शहर बसा जाती हूँ।

।। संदेहों का घेरा ।।

तेरे संदेहों की वेदना न सह सकेंगे हम,
तेरे संदेहों की वेदना न सह सकेंगे हम ।

तेरे सवालों के घेरे में घिर-घिर कर अब
दिन तो कट गया रात भर न सो सकेंगे हम ।

घुलकर गुम होते गए अंधेरों में निरन्तर,
तेरे ही नाम का दीप जलाकर जीएंगे हम ।

ये ख्वाब आँखे और ये आँसू भी तुझसे ही हैं,
वादा रहा राह भी तेरी ही देखा करेंगे हम ।

तेरी दी खुशी के कर्ज से उऋण होकर,
मरते-मरते यादें भी तुझे ही दे पाएंगे हम ।

।। क्षितिज ।।

ये कैसा रिश्ता हैं धरती और गगन का,
क्षितिज नाम दिया दोनों के मिलन का।

न मिलन की खुशी न विरह की वेदना,
बस यही काफी हैं कि ये मेल हैं मन का।

नीला वितान बन अडा रहा सजनी संग,
मिसाल देता रहा जमाना इनके बंधन का।

मिल भी जाती कायनाल दोनों जहाँ की,
गर बाराती बन ब्याह रचवाते दुल्हन का।

।। जिंदगी ।।

लम्हे भी कमाल कर जाते हैं,
जिंदगी से सवाल कर जाते हैं।

करते नहीं सब्र यहाँ कोई,
सवालों से निढाल कर जाते हैं।

इबादत की वक्त ने जब-जब
लफ्जों से निहाल कर जाते हैं।

खूबसूरत से प्रेमनगर में भी,
कलाकारी बेमिसाल कर जाते हैं।

एक चेहरे के दीदार को तेरे,
दर्पण-सा खयाल कर जाते हैं।

जुदाई को सहते - सहते,
फैसलों पर मलाल कर जाते हैं।।

।। दोस्त वो पुराने कहाँ हैं ।।

पूछो न मुझे यारों अब,
वो सारे बहाने कहाँ हैं

मुसाफिर तेरी गुमराही के
दोस्त वो पुराने कहाँ हैं

खुदगर्जी को फर्ज कहने
वालों के ठिकाने कहाँ हैं

बदल सोच कर्ज चुकाए
उनके जमाने कहाँ हैं

खुद को खुद से मिला दे
ऐसे अब तराने कहाँ हैं ।।

।। धूप-छाँव ।।

छाँव में भी धूप का रंग नजर आने लगा हैं,
मिजाज-ए-मौसम अब उनकों भाने लगा हैं ।।

अपनों से अपनेपन की पहले सी मुलाकाते कह,
जिंदगी के फलसफे से दिल घबराने लगा हें ।

किस्मत का करिश्मा भी समझ पाते कहाँ,
हाथों की लकीरों को खुद से मिटाने लगा हैं ।

अब तक तो गमों से ही दोस्ताना रहा मेरा,
कभी-कभी आइना भी तन्हाई चुराने लगा हैं ।।

पता आशियानें का पूछता हैं जमाना अब तो,
पर राज-ए-मोहब्बत को अब वो छूपाने लगा हैं ।।

जुदाई का भरम रख यूँ आँखे न चुराओं,
महफिलों में मेरी ही नज्म गुनगुनाने लगा हैं ।

इश्क के मेलों में टहलते- टहलते हमराही,
नफरतों का नकाब वो चेहरे से हटाने लगा हैं ।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती अंजली पंड्या

जन्म - 21/02/1977

माता-पिता - श्रीमती कान्ता जोशी - श्री नटवरलाल जी जोशी

पति - श्री राकेश पंड्या

शिक्षा - स्नातकोत्तर (हिन्दी) एस.टी.सी.

सम्प्रति - शिक्षिका (राज.उ.मा.विद्या. कनबा)

पता - मु.व पो. कनबा, ब्लाक- बिछीवाड़ा, जिला डूंगरपुर (राजस्थान) 314804

मो. - 9799200505

ई मेल - rakeshpandya1972@gmail.com

कार्यक्षेत्र - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा यूनिसेफ के सॉझा प्रयासों से भाषा शिक्षण सिद्धांतो से कक्षा-कक्ष तक (एल.एल.एफ.) एक वर्षीय सर्टिफिकेट कोर्स पूर्ण करना। शिक्षण संबंधी शोध कार्य, दैनंदिनी संधारण जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान। विद्यालय में नामांकन वृद्धि हेतु ब्लॉक लेवल पर सम्मानित। पत्र-वाचन जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान। उपखण्ड स्तरीय सम्मान। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान (राज्यपाल अवार्ड) से सम्मानित, जयपुर 5 सितम्बर 2018।

प्रकाशन - पत्र-पत्रिकाओं के लिए आर्टिकल, कहानी आदि। मुक्तक, गीत, गज़ल एवं कविताओं का लेखन एवं शब्द साधना, हिंदी सागर आदि में प्रकाशन। विभागीय साहित्यीक प्रतियोगिताओं में भाग लेना। कवि सम्मेलन एवं काव्य गोष्ठियों में काव्य पाठ करना। 'ख्वाहिशें' लघु पुस्तिका का प्रकाशन।

सम्मान - ब्रह्म समाज ट्रस्ट अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा साहित्यिक एवं शैक्षणिक उपलब्धियों हेतु सम्मानित। राजस्थान पत्रिका, वागड़ विभा एवं भारत विकास परिषद डूंगरपुर (राजस्थान) द्वारा हिंदी दिवस पर सम्मानित। श्री वृहद भट्ट मेवाड़ा युवा समाज, बांसवाड़ा-डूंगरपुर द्वारा सम्मानित। राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मान समारोह एवं विशाल सम्मेलन भीलवाड़ा में सम्मानित। शब्द साधना राष्ट्रीय साहित्यिक समूह द्वारा शब्द साधना अलंकरण द्वारा सम्मानित। विश्व हिन्दी रचनाकार मंच दिल्ली द्वारा हिंदी सागर सम्मान। वुमन आवाज आवार्ड 2018।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-05-5

मूल्य- 55/-